थोड़ी-बहुत कोल्ड की आवश्यकता थी, तब आज वहां टेम्परेचर ऊपर गया, जिसका बुरा असर शायद गेहूं पर भी हो सकता है। यह स्थिति कभी-कभी आती है। इसके बारे में मार्गदर्शन करने का काम टेलीविज़न और ऑल इंडिया रेडियो के माध्यम से हमेशा होता है। इस बारे में हर क्षेत्र में और हर राज्य में क्या-क्या कदम उठाने की आवश्यकता है, इसकी सलाह किसानों को बराबर दी जाती है।

डा॰ कुमकुम राय: सर, मंत्री जी ने अपने जवाब में कहा कि मौसम में आए असमान बदलाव को प्राकृतिक आपदा में शामिल नहीं किया जाता है। सर, जो छोटे-छोटे सब्जी-उत्पादक किसान हैं, वे कृषि-बीमा नहीं कराते हैं। मौसम में जो असामान्य बदलाव आता है, वह भी प्राकृतिक ही है। क्या छोटे-छोटे किसान, जो कृषि-बीमा नहीं कराते हैं, इनको राहत देने का कोई और दूसरा उपाय सोचा गया है या ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौसम में जो इस प्रकार के बदलाव आने लगे हैं, जिसका फसल पर नुकसान होने का अंदेशा हमेशा रहता है। ...(व्यवधान)... तो क्या इस बदलाव को भी प्राकृतिक आपदा में शामिल किया जाएगा?

श्री शरद पवार: अभी तो ऐसा सुझाव सेन्ट्रल गर्वनमेंट के पास नहीं है।

श्री सभापति: नेक्स्ट क्वैश्चन।

Damage to crops in Punjab

*109. SHRI VARINDER SINGH BAJWA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether Government are aware that due to severe cold this season, potato and some other crops have been badly damaged in Punjab;

(b) whether any report from the State Government has been received in this connection;

(c) if so, the details thereof; and

(d) the compensation proposed to be given to the affected farmers?

THE MINISTER OF AGRICULTURE (SHRI SHARAD PAWAR): (a) to (d) There has been damage to crops, especially, potato in Punjab and Uttar Pradesh due to severe cold, this season. Out of the total area of 75,000 hectares under potato crop, about 50,250 hectares are reported to have been adversely affected. No proposal has yet been received from Government of Punjab or Uttar Pradesh for compensation to the farmers.

श्री वरिन्दर सिंह बाजवा: सर, मंत्री जी ने जवाब दिया है कि पंजाब और उत्तर प्रदेश में कोहरे, जिसको हम ग्राउंड फॉग कहते हैं, उसमें 75 हजार एकड़ में पोटैटो की क्राप खराब हुई है। इन्होंने कहा है कि पंजाब और उत्तर प्रदेश से कोई प्रोपोजल नहीं आई है। मैं यह पूछना चाहता हूं कि मंत्री जी कह रहे थे कि पंजाब में डाइवर्सिफिकेशन की बहुत जरूरत है। वहां व्हीट की जगह और चीजें लगाई जाएं। अगर लोग पोटैटो वगैरह लगाते हैं या उन्होंने डाइवर्ट किया है, तो उनका नुकसान होता है। वहां उनका सीड भी नहीं बचेगा। पंजाब गवर्नमेंट उसकी कोई रिस्पॉंसिबिलीटी नहीं ले रही है और सेन्ट्रल गवर्नमेंट को फिगर्स पता है, पर ये कहते हैं कि हमें कोई रिपोर्ट नहीं आई। मैं इनसे यह पूछना चाहता हूं कि किसान क्या करेंगे?

श्री शरद पवार: ऐसी परिस्थिति में किसान को क्या-क्या करना चाहिए, इस बारे में रेग्यूलरली टेलीविज़न और ऑल इंडिया रेडियो पर संदेश दिया जाता है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: और सब किसानों के पास टेजीविज़न तो है ही। ...(**व्यवधान**)...

श्री शरद पवार: कम-से-कम रेडियो तो है। ...(**व्यवधान**)... आजकल लोग रेडियो सुनते हैं। पंचायत में रेडियो भी है और टेलीविज़न भी है। लोग जगह-जगह पर सुनते हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री वरिन्दर सिंह बाजवा: सर, मुझे तो इनकी बात समझ में नहीं आई। ...(**व्यवधान**)... पहले तो यह बताइए कि ये क्या कहना चाहते हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: आप टेलीविज़न पर देखिए, बात समझ में आ जाएगी।...(**व्यवधान**)...

श्री वरिन्दर सिंह बाजवा: सर, टेलीविज़न पर क्या देखेंगे? ...(**व्यवधान**)...मेरा सवाल तो यह है कि लोग क्या करें? ...(**व्यवधान**)... आप उनको कम्पेन्शेसन कैसे देंगे? ...(**व्यवधान**)...क्या उनको कम्पेन्शेट नहीं किया जाएगा? आप पंजाब से रिपोर्ट मंगवाइए। क्या यह सेन्ट्रल गवर्नमेंट की जिम्मेवारी नहीं है?

श्री शरद यादव: नहीं, इसमें कम्पेन्शेसन की कोई सुविधा नहीं है, प्रोविज़न नहीं है। इस तरह की परिस्थिति कभी-कभी हो जाती है। इस बारे में कम्पेन्शेसन नहीं है। जहां तक इंश्योरेंस की बात है, तो इंश्योरेंस में कौन-कौन सी फसलें लेते हैं, इसकी सूची बनाई गई है। उनका जो प्रीमियम है, उसको भी भारत सरकार सब्सिडाइज़ करने की कोशिश करती हैं, पैसे का प्रावधान करती है, मगर सभी छोटे-मोटे क्रॉप्स के लिए इंश्योरेंस अभी लागू नहीं है।

श्री वरिन्दर सिंह बाजवा: सर, पंजाब में तो ...(**व्यवधान**)... हमने कोई देखा नहीं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: नेक्स्ट क्वैश्चन। ...(व्यवधान)...ठीक है, ठीक है। ...(व्यवधान)... जल्दी से क्वैश्चन की लीजिए।

श्री एम॰एस॰ गिल: सर, 108 और 109, दोनों सवाल जुड़े हुए हैं। टेम्परेचर बहुत बढ़ा है। राजस्थान, पंजाब वगैरह ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: आप क्वैश्चन करिए। ...(व्यवधान)... जरूरी होगा, जो जवाब दिया जाएगा।

श्री एम॰एस॰ गिल: सर, calamity तो calamity ही है। वह चाहे गर्मी से आए या चाहे सर्दी से आए। ये कहते हैं कि सर्दी की calamity तो हम मानते ही नहीं। ये कुछ मदद करें, दिल का कुछ रहम दिखाएं। आम आदमी को कुछ राहत दें। ...(व्यवधान)...

श्री शरद यादव: ठीक है, उन्होंने सलाह दी है। हम इस पर विचार करेंगे। ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS

Cleft lip in children

*102. SHRI B.J. PANDA: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that around 2.5 million kids in the country suffer from cleft lip;

(b) whether there are no proper medical facilities in the country for treatment of this palate defect;

(c) if so, whether government propose to set up such facilities to help the children to have normal growth; and

(d) if so, the details thereof?

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (DR. ANBUMANI RAMADOSS): (a) to (d) No large studies have been carried out in India to establish the prevalence of cleft lip. However, as per rough estimates, the incidence of cleft lip and palate is approximately 1 per 700 to 1000 children. Considering the population of the country, it is estimated that approximately 1.5 million children are having cleft lip and palate.